डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा - चकिया ।

B.A. Part - II.
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper - III

Date :- 24-02-2022

प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य

युग निर्माता प्रेमचंद का साहित्य विविधताओं से परिपूर्ण है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, बाल-कथाओं, सम्पादकीय लेख, समीक्षा आदि लगभग सभी क्षेत्रों में अपने हाथ आजमाए और लगभग सभी में सफलता पाई।

जिस समय प्रेमचंद ने उपन्यास-लेखन में अपना पदार्पण किया उस समय अय्यारी एवं तिलिस्म से भरपूर उर्दू उपन्यासों की भरमार थी। इनमें देवकीनन्दन खत्री के उपन्यास सर्वप्रसिद्ध थे। हालांकि प्रेमचंद ने भी अपने लिए एक अलग ही क्षेत्र चुना। जिसमें उन्होंने भारतभूमि से जुड़े यथार्थ पात्रों को अपने उपन्यासों में प्रधान स्थान दिया। भारत के गली-कूचों एवं गाँवों को अपने उपन्यास का मंच बनाया जो कि अपने-आप में उस काल में एक मौलिक प्रयोग था।

प्रेमचंद ने अपने आरम्भिक उपन्यासों, मुख्य रूप से सामाजिक समस्याओं यथा- धार्मिक आडम्बर, विधवा-विवाह, वेश्यावृत्ति आदि के प्रश्नों को उठाया। उन्होंने पहले उर्दू उपन्यास (जिसका लेखन 1903 में शुरू हुआ और 1905 में पूरा हुआ) 'असरारे मआबिद (देवस्थान रहस्य)' में तीर्थ स्थलों और मंदिरों में व्याप्त भ्रष्टाचार, वेश्यावृत्ति एवं स्त्रियों के त्रियाचरित्र का उद्घाटन किया। दूसरे उपन्यास 'हमखुर्मा-ओ-हमसवाब' (1906) में

Scanned by CamScanner

विधवा विवाह की समस्या को उठाया। इस उपन्यास का हिन्दी रूपान्तरण, जो स्वयं उन्हीं के द्वारा किया गया था, 1907 में 'प्रेमा' (दो सखियों का विवाह) शीर्षक से प्रकाशित हुआ। उनका तीसरा उर्दू उपन्यास 'जलवा-ए-ईसार' 1912 में जिसका हिन्दी में रूपान्तरण 1921 ई० में 'वरदान' शीर्षक से हुआ। प्रेमचंद का पहला बड़ा उपन्यास 'सेवासदन', जिसने उन्हें हिन्दी लेखन में स्थापित किया मूलतः उर्दू में ही 'बजारे-हुस्न' नाम से लिखा गया था। अपने इस उपन्यास में प्रेमचंद ने मुख्य रूप से वेश्यावृत्ति की समस्या को उठाया, जिसकी प्रेरणा उन्हें संभवतः मिर्जा हादी रुस्वा के उपन्यास 'उमराव जान अदा' (1899) से मिली। 'सेवासदन' में स्त्रियों द्वारा वेश्यावृत्ति अपनाये जाने के कारणों को रेखांकित किया गया है। इन कारणों में दहेज प्रथा, पति का क्रूर व्यवहार, समाज में स्त्री की उपेक्षा और असहानुभूति आदि कारणों को प्रमुख माना है।

'सेवासदन' की आशातीत सफलता ने ही प्रेमचंद को 'प्रेमाश्रम' (1922) और 'रंगभूमि' (1925) जैसे उपन्यासों को रचने की प्रेरणा दी। इन उपन्यासों में उन्होंने ब्रिटिश राज में जमींदारों, पुलिस और सरकारी अधिकारियों द्वारा किसानों के शोषण का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है।

Scanned by CamScanner

ब्रिटिश शासन से आक्रान्त कृषकों की दर्दनाक स्थिति का वर्णन उन्होंने लगभग अपने सभी उपन्यासों यथा- 'प्रेमाश्रम,' 'रंगभूमि,' 'कायाकल्प,' 'कर्मभूमि,' 'गोदान' आदि में किया है। ऐसा नहीं है कि प्रेमचंद के उपन्यासों में केवल भारतीय कृषक समाज की समस्याओं का ही अंकन हुआ, तदयुगीन मध्यम वर्ग भी उनकी नजरों से अछूता न था। उपन्यास 'सेवासदन' से ही प्रेमचंद ने मध्यम वर्ग की समस्याओं को उकेरना शुरू कर दिया था। आगे 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'गबन' आदि में इन पर और गहराई के साथ विचार किया। मध्यम वर्ग से चली आ रही परम्परागत रूढ़ियों पर उन्होंने आघात पहुँचाया एवं मध्यमवर्गीय अन्तर्विरोधों को बड़ी कुशलता के साथ उकेरा।

प्रेमचंद ने अपनी भाषा-शैली के रूप में साधारण बोलचाल शैली को अपनाया। वस्तुतः प्रेमचंद की मान्यता थी कि हम समाज से जिस अंग से अपनी कथा की विषय-वस्तु चयन करते हैं, भाषा भी उसी समुदाय की होनी चाहिए और प्रेमचंद ने तो अपने उपन्यासों का मुख्य पात्र साधारण जनता को ही बनाया था। वस्तु-संगठन, चरित्र-रचना एवं औपन्यासिक शिल्प की दृष्टि से इनके उपन्यास उच्च कोटि के हैं जिन्होंने हिन्दी उपन्यास को ऐसे स्थान पर पहुँचा दिया, जो आज भी सर्वश्रेष्ठ मानदण्ड निर्धारित करते हैं।

Scanned by CamScanner